विषय - संस्कृत
कक्षा - B.A. Part I
पत्र - I
Date - 9.5.2020

डॉ. सावित्री सिंह
संस्कृत विभाग
शे० म० कॉ० सासाराम

किरातार्जुनीयम् के आधार पर दुर्योधन की प्रजानीति

दिनांक 5.5.2020 के अध्ययन सामग्री से आगे

छल द्वारा जीती गई भूमि को नीति द्वारा जीतने की इच्छा वाला दुर्योधन सभी उपायों का समुचित विनियोग करता है जिसके परिणाम स्वरूप उसकी सा[री] सम्पत्तियाँ होड़ लगाकर बढ़ रही हैं।

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः ॥15॥

तेन पदेषु सम्यक् विभज्य विनियोगसत्क्रियाः लम्भिताः उपायाः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतीः अर्थसम्पदः अनारतं फलन्ति।

इस प्रकार दुर्योधन द्वारा उचित स्थानों पर समुचित विभाग करके पहुँचाये गये (अर्थात् प्रयुक्त) विनियोग द्वारा सुन्दर ढंग से समादृत उपाय मानो परस्पर होड़ सी लगाकर भविष्य में उत्तरोत्तर बढ़ने वाली स्थायी धनसम्पत्तियाँ निरन्तर उत्पन्न कर रहे हैं।

इतना ही नहीं दुर्योधन का प्रभाव इस बात से जाना जा सकता है कि राजाओं द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों को सप्तपर्ण पुष्प की गन्ध वाला मद उसके सभाभवन के आँगन को जो अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरा

Scanned by CamScanner

हुआ है, अत्यधिक गीला बना रहा है

दुर्योधन अपने अधीन राजाओं के आचरण के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेता है और उसकी योजनाओं में इतनी गोपनीयता होती है कि उनके क्रियान्वित होने पर ही लोगों को पता चलता है

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः ।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः ॥२०॥

दुर्योधनस्य कार्याणि फलान्तानि भवन्ति । गूढचाराः शुद्धचारित्राः भवन्ति । तेषां साहाय्येन सोऽन्यराज्यानां रहस्यं जानाति । परन्तु तस्य रहस्यं यः कोऽपि ज्ञातुं न शक्नोति । भूगर्भे वर्तमाना धातव इव फलं दृष्ट्वैव अस्य कार्यपद्धतिर्ज्ञेया ।

सभी कार्यों को पूरी तरह समाप्त करके वह दुर्योधन उत्तम चरित्र वाले (प्रलोभन में न आने वाले) गुप्तचरों के द्वारा (अर्थात्) राजाओं के सभी व्यवहारों को सम्पूर्ण रूप से जानता है। विधाता की इच्छा की तरह उसकी योजना अत्यन्त समृद्धिवाले एवं कल्याणकारी परिणामों के द्वारा ही जानी जाती है। दुर्योधन ने कभी डोरी चढ़ाकर धनुष को नहीं उठाया, और न ही कभी क्रोध से मुख ही कुटिल किया। फिर भी अधीनस्थ राजा लोग इसके आदेश को माला की तरह सिर पर धारण करते हैं (अर्थात् शिरोधार्य करते हैं)

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥२१॥

Scanned by CamScanner